मधुर वाणी

भगवान ने मनुष्य को बहुत-सी शक्तियाँ दी हैं। उनमें से बोलने की शक्ति भी एक है। यदि मनुष्य के पास बोलने की शक्ति न होती हो उसे बहत कठिनाई होती। अपने मन की बात समझाने के लिए गूँगे की तरह इशारों से काम चलाना पड़ता। अब तो हम अपनी हर एक बात बोलकर झट कह देते हैं।

कई लोग वाणी की शक्ति को व्यर्थ गवाते हैं। वे व्यर्थ बोलते रहते हैं और कभी नहीं थकते।

कुछ लोग ऐसी जलो-कटी बात कहते हैं कि सुनने वालों का हृदय दुःखी हो जाता है। कुछ अच्छे लोग अपनी बात को बहुत मिठास से कहते हैं। मिठास से भरी बोली को ही मधुर वाणी कहा जाता है।

मधुर वाणी एक बहुत बड़ा गुण है। इससे हम दूसरे का मन जीत लेते हैं। यदि हम चाहते हैं कि लोग हमारी बात ध्यान से सुनें, तो हमें मधुर वाणी बोलनी चाहिए।

कोयल भी काली है और कौआ भी काला है। कोयल मीठा बोलती है। कौआ कड़ुवा बोलता है। कौए की बोली सुनने को किसी का मन नहीं चाहता। इसी तरह जो लोग कठोर बोली बोलते हैं, उनकी बात सुनकर दुःख होता है। यदि आप किसी से मधुर बोलें, तो वह भी मधुर वाणी बोलेगा। इसलिए सदा मधुर वाणी बोलनी चाहिए।